सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील में जनांकिकी का विश्लेषण

डॉ. शंकरलाल, सहायक प्राफेसर, बी. एन. डी. रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चिमनपुरा।
राजेन्द्र कुड़ी, शोद्यार्थी, भूगोल विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश

किसी भी प्रदेश के विकास में जनसंख्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है। जनसंख्या वृद्धि का कृषि के विकास पर अत्यधिक प्रभाव पडता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ जल संसाधनों के उपयोग मे परिवर्तन आना स्वभाविक है। बढ़ती जनसंख्या जीविकोपार्जन हेतु संसाधनों पर आश्रित रहती है, परिणामस्वरूप जल संसाधन के उपयोग में परिवर्तन आता है, जो एक सतत प्रक्रिया है। इस प्रकार जनसंख्या और जल संसाधन का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध हैं। जनसंख्या में वृद्धि होने पर जल संकट दृष्टिगत होता है तकनीक तथा उपयोग परिवर्तन होता है, जिससे वह बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये जल, भोजन, वस्त्र एवं उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। जनसंख्या में वृद्धि होने पर जल संसाधनों का गहन उपयोग होने लगता है और तद्नुरूप तकनीकी में परिवर्तन होने लगता है प्रबन्ध व उत्पादन के रूप में कृषि से सम्बन्धित जनसंख्या उसके विकास का नियन्त्रक है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या संरचना, जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या घनत्व, साक्षरता आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इसमें द्वितीयक आंकड़ों की सहायता ली गई है।

संकेतांक : *जनसंख्या वृद्धि, जीविकोपार्जन, संसाधन, जल संकट, तकनीक, प्रबंधन, उत्पादन, कृषि, घनत्व, साक्षरता।*

परिचय :

किसी भी क्षेत्र के लिए जनसंख्या उसके जीवन के रक्त के रूप में होती है इसलिए जनसंख्या के अध्ययन के बिना क्षेत्र के किसी भी तत्व का अध्ययन सम्पूर्ण नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध प्रबंध के विश्लेषण में जनसंख्या का बहुत अधिक महत्व है। किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि, जल संसाधन उपयोग के दबाव को प्रभावित करती है यहीं कारण है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ श्रीमाधोपुर तहसील के जल संसाधनों का दोहन भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्र का जल संकट बढ़ रहा है।

जनसंख्या वृद्धि दरः

किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर उस क्षेत्र की आर्थिक प्रगति सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि का प्रतिफल होती है। एक निश्चित समयावधि में किसी स्थान के निवासियों की संख्या में हुये परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि द्वारा व्यक्त किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या तथा प्रतिशत दोनों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिये निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनगणना से भाग देकर 100 से गुणा कर दिया जाता है तथा वास्तविक वृद्धि दर ज्ञात करने के लिये 10 का भाग देकर ज्ञात की जाती है।

सारणी सं. 1 : श्रीमाधोपुर तहसील में नगरीय जनसंख्या वृद्धि (प्रतिशत में)

क्र.सं.	वर्ष	वृद्धि दर (कमी/वृद्धि)
1.	1931	—
2.	1941	9.98
3.	1951	7.60
4.	1961	39.59
5.	1971	−10.91
6.	1981	79.37
7.	1991	29.41
8.	2001	19.26
9.	2011	10.08

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 2011 सीकर।

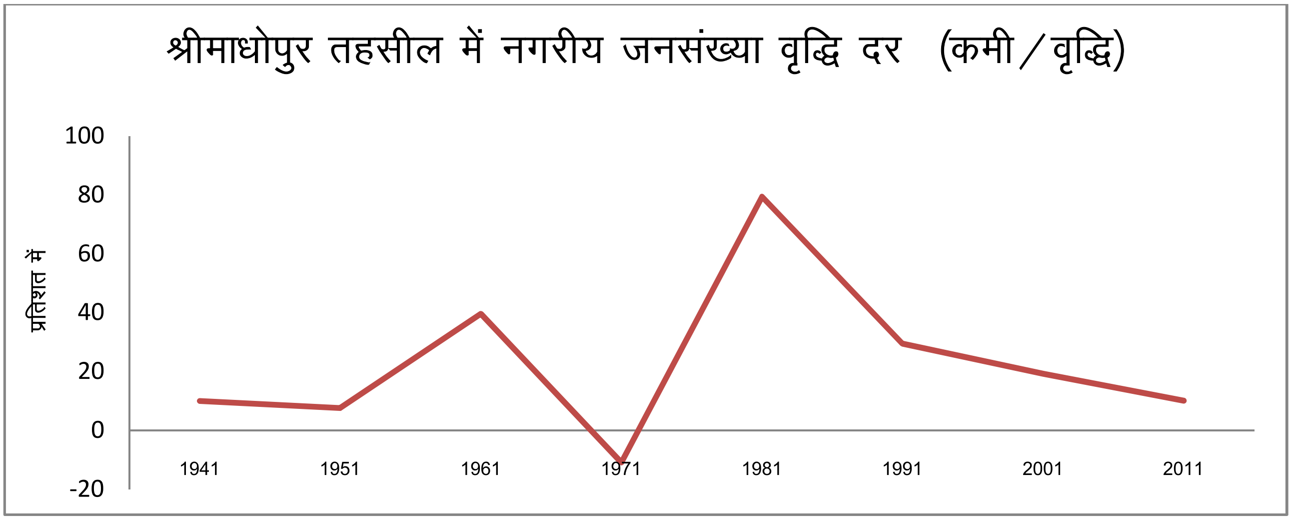

आरेख 1 : श्रीमाधोपुर तहसील में नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर

श्रीमाधोपुर तहसील में वर्ष 1941 में नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर 9.98 प्रतिशत थी जो वर्ष 1951 में घटकर 7.60 हो गई। वर्ष 1951 से 1961 के दशक में कुछ कारणों से अध्ययन क्षेत्र में नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर में आशातीत वृद्धि हुई। वर्ष 1961 में श्रीमाधोपुर तहसील में नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर 39.59 प्रतिशत ही रही तथा वर्ष 1971 में यह घटकर −10.91 प्रतिशत रही। वर्ष 1981 में पुनः वृद्धि (79.34 प्रतिशत) देखने को मिली। वर्ष 1991 के पश्चात् वर्ष 2001 तथा वर्ष 2011 में नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर में लगातार कमी अंकित की जा रही है।

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व दोनों परस्पर सम्बन्धित है लेकिन भिन्न सकंल्पनाऐं है जनसंख्या वितरण एवं घनत्व अध्ययन की पृष्ठभूमि से पता चलता है कि जनसंख्या भूगोल के एक स्वतंत्र शाखा के रूप में विकसित होने से पूर्व ही जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का आपसी सम्बंध किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या की जानकारी प्राप्त करने के लिए जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का विश्लेषण मुख्य आधार होता है। जनसंख्या वितरण प्रारूप न केवल मनुष्य के किसी क्षेत्र विशेष में बसाव सम्बन्धित अभिरूचि एवं विरूचि का द्योतक है, अपितु क्षेत्र में कार्यरत भौगोलिक कारकों के संश्लेषण का स्पष्ट प्रदर्शक भी होता है।

मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आई जटिलताओं के साथ–साथ न तो जनसंख्या वितरण प्रारूप ही सरलता से मिलता है और न ही इसके वितरण का स्पष्टीकरण क्योकि वर्तमान समय में जनसंख्या वितरण बहुत अधिक क्षेत्रिय विस्तार लिये हुये है और साथ ही राजनैतिक एवं प्रशासनिक ईकाईयाँ भी बढ़ गई है। अब जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक जटिल प्रक्रिया जरूर है, लेकिन जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का सफलतापूर्वक विश्लेषण किया है।

जनसंख्या वितरण

जनसंख्या वितरण किसी क्षेत्र की जनांकिकीय विशेषताओं के अध्ययन का आधार होता है, जनसंख्या का वितरण क्षेत्रीय प्रारूप की और इशारा करता है जनसंख्या वितरण से आशय विभिन्न क्षेत्रों में लोग कितनी संख्या में निवास करते है से है। श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या का वितरण असमान है यहाँ कहीं पर बहुत अधिक जनसंख्या निवास करती है तो कहीं पर बहुत कम जनसंख्या निवास करती है।

सारणी सं. 2 : श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या वितरण

क्षेत्र	जनसंख्या					
	2001			2011		
	पुरूष	महिला	*कुल*	पुरूष	महिला	*कुल*
ग्रामीण	219407	210133	*429540*	244103	229359	*473462*
शहरी	40727	36712	*77439*	57160	52706	*109866*
कुल	260134	246845	*506979*	301263	282065	*583328*

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011, राजस्थान।

सारणी सं. 3 : श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या वितरण का दशकीय अन्तराल

क्षेत्र	जनसंख्या वितरण		
	10 वर्षीय अन्तराल		
	पुरूष	महिला	*कुल*
ग्रामीण	24696	19226	43922
शहरी	16433	15994	32427
कुल	41129	35220	76349

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011, राजस्थान।

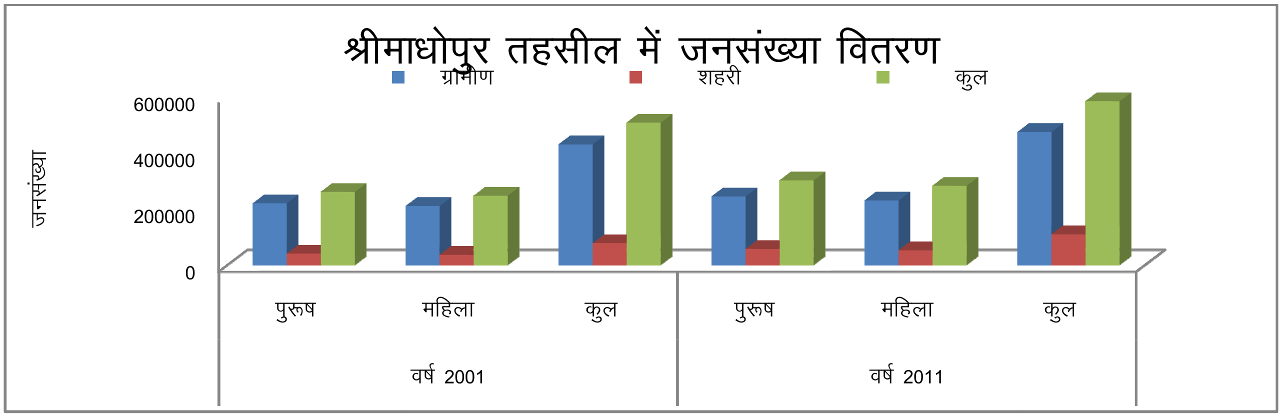

आरेख 2 : श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या

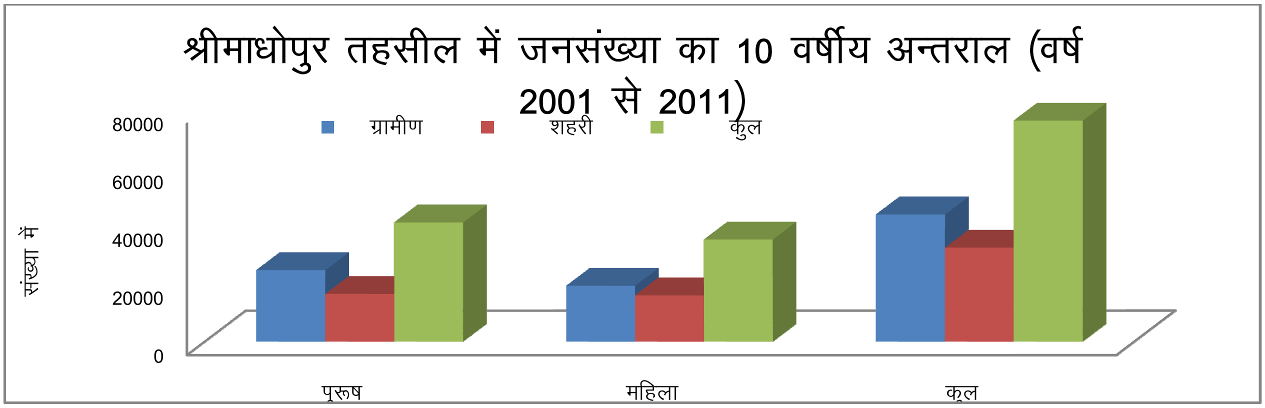

आरेख 3 : श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या का 10 वर्षीय अन्तर

वर्ष 2001 की जनगणनानुसार जयपुर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील की कुल जनसंख्या 506979 थी। तहसील में ग्रामीण जनसंख्या 429540 व्यक्ति तथा शहरी जनसंख्या 77439 व्यक्ति थी। पुरूष जनसंख्या वर्ष 2001 में 260134 थी, जिसमें 219407 ग्रामीण तथा 40727 शहरी जनसंख्या थी।

इसी प्रकार श्रीमाधोपुर तहसील की वर्ष 2011 में कुल जनसंख्या 583328 है। अध्ययन क्षेत्र की वर्ष 2011 में ग्रामीण जनसंख्या 473462 थी तथा शहरी जनसंख्या 109866 है। कुल जनसंख्या में पुरूष जनसंख्या 301263 तथा स्त्री जनसंख्या 282065 आंकी गई है।

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक

श्रीमाधोपुर तहसील की जनसंख्या का वितरण असमान है तहसील में कहीं पर बहुत ज्यादा जनसंख्या निवास करती है तो कही पर बहुत कम जनसंख्या निवास करती है। सामान्यतः अरावली पर्वतमाला क्षेत्र के समीप स्थित होने के कारण तहसील के पश्चिमी एवं उतरी पश्चिमी भागों में विरल एवं छितरी हुई जनसंख्या पाई जाती है, जबकि पूर्वी एवं उतरी पूर्वी क्षेत्र में सघन जनसंख्या पाई जाती है। क्षेत्र में जनसंख्या का वितरण जल की उपलब्धता, परिवहन सुविधा तथा स्वास्थ्य सेवाओं के अनुरूप है।

जनसंख्या घनत्व

प्रतिवर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते है संतुलित जनसंख्या घनत्व किसी प्रदेश की उन्नति और भावी विकास का अनुमान लगाने में मुख्य आधार होता हैं। जनसंख्या घनत्व कई कारणों का परिणाम हैं जिसमें प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और कृषि आदि कारकों को गिनाया जा सकता हैं अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक असमानता के कारण यहाँ जनसंख्या घनत्व में विभिन्नता पाई जाती है।

सारणी सं. 4 : श्रीमाधोपुर तहसीलः जनसंख्या घनत्व

तहसील	क्षेत्र	जनसंख्या घनत्व		10 वर्षीय अन्तर
		वर्ष 2001	वर्ष 2011	
श्रीमाधोपुर तहसील	ग्रामीण	324	357	33
	शहरी	1536	2179	643
	योग	368	423	55

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011 राजस्थान।

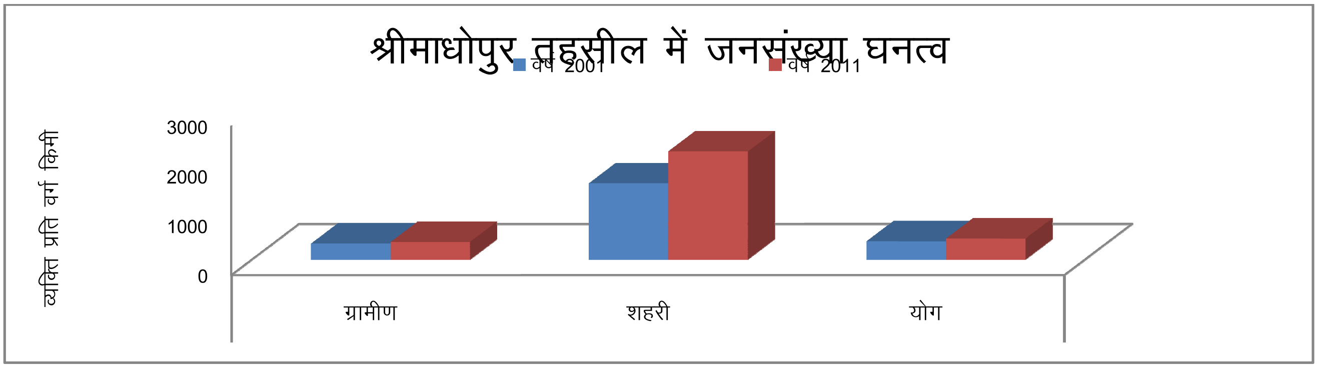

आरेख 4 : श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या घनत्व

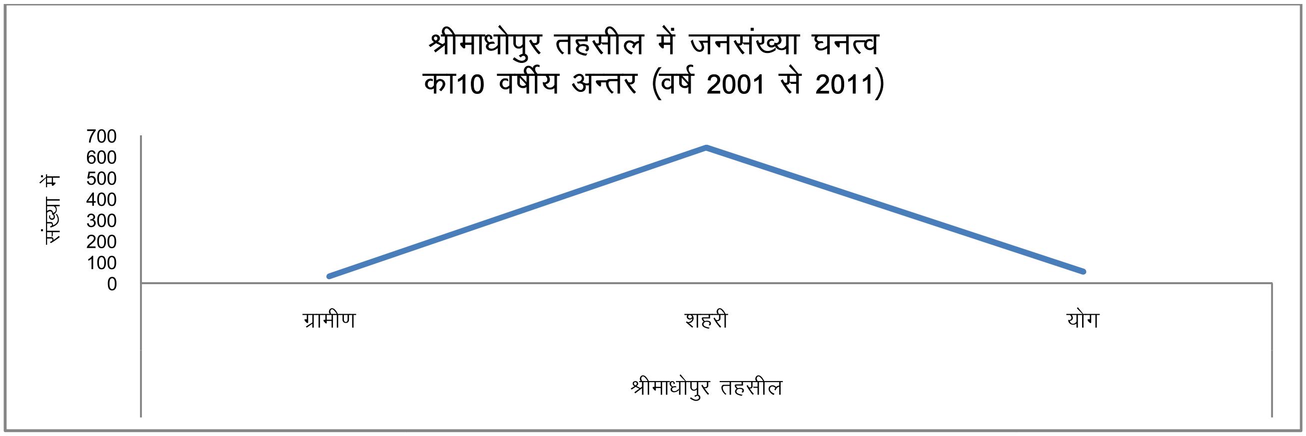

आरेख 5 : श्रीमाधोपुर तहसील में जनसंख्या घनत्व का 10 वर्षीय अन्तराल

जनसंख्या वितरण को पूर्णतः विश्लेषण जनसंख्या घनत्व के माध्यम से किया जाता है। जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रति इकाई में रहने वाले लोगों की संख्या से है। श्रीमाधोपुर तहसील में वर्ष 2001 कुल जनघनत्व 368 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था जो बढ़कर वर्ष 2011 में 423 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गया। वर्ष 2001 में तहसील का ग्रामीण जनघनत्व 324 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर, वर्ष 2011 में 357 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। श्रीमाधोपुर तहसील का 2001 में शहरी जनघनत्व 1536 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर, वर्ष 2011 में यह शहरी जनघनत्व 2179 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया।

अध्ययन क्षेत्र में ज्यादातर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रो में निवास करती है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत कुल 122 आबाद गाँव हैं जिनका जनघनत्व पूर्णतया ग्रामीण क्षेत्रों में फैला हुआ है।

लिंगानुपात

किसी क्षेत्र की जनसंख्या में लिगांनुपात पुरूष एवं स्त्रियों के मध्य अनुपात का सूचक लिंगानुपात प्रति एक हजार पुरूषों पर स्त्रीयों की संख्या के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार श्रीमाधोपुर तहसील का लिंगानुपात 936 हैं।

सारणी सं. 4 : श्रीमाधोपुर तहसील में लिंगानुपात

तहसील	वर्ष 2001		कुल	वर्ष 2011		कुल	कमी या वृद्धि
	नगरीय	**ग्रामीण**		**नगरीय**	**ग्रामीण**		
श्रीमाधोपुर तहसील	901	958	949	922	940	936	–13

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, वर्ष 2011 राजस्थान।

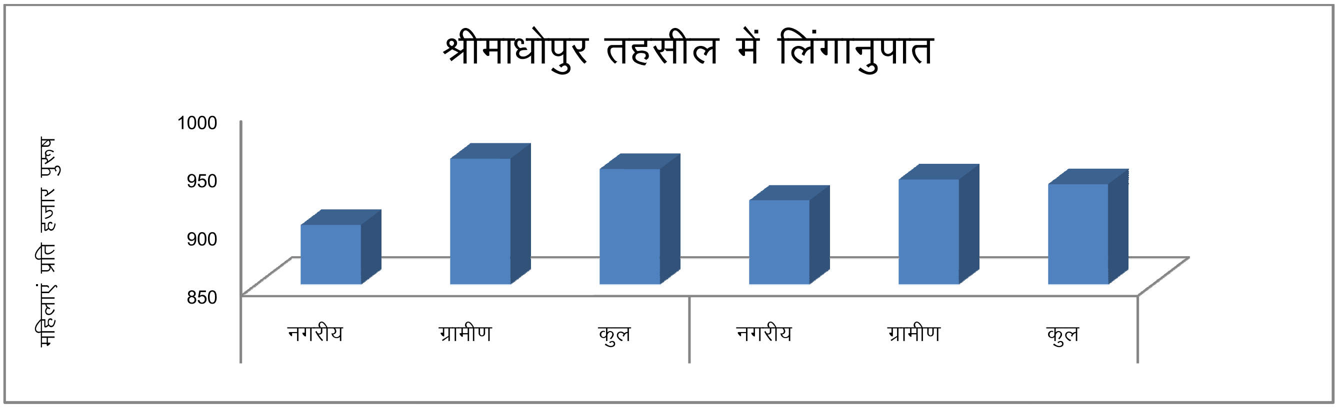

आरेख 6 : श्रीमाधोपुर तहसील में लिंगानुपात

श्रीमाधोपुर तहसील की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 में 506979 थी जिसका कुल लिंगानुपात 949 था जो वर्ष 2011 में घटकर 936 हो गया जबकि तहसील की वर्ष 2011 की कुल जनसंख्या 583328 थी, जिसमें 13 महिलाओं की कमी हुई है।

तहसील का नगरीय लिंगानुपात वर्ष 2001 में 901 था जो वर्ष 2011 में बढ़कर नगरीय लिंगानुपात 922 हो गया। जिसमें नगरीय लिंगानुपात में 21 महिला की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार तहसील का ग्रामीण लिंगानुपात वर्ष 2001 में 958 था, जो कि घटकर वर्ष 2011 में 940 हो गया। ग्रामीण लिंगानुपात में 18 महिलाओं की कमी हुई है। अध्ययन क्षेत्र में लिंगानुपात की इस कमी का मुख्य कारण सामजिक रूढ़िवादिता ही है।

साक्षरता

साक्षरता किसी भी सभ्य समाज के विकास का मापदण्ड है। साक्षर व्यक्तियों को सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित विकास कार्यों की जानकारी अधिक होती है। समाज का यही वर्ग किसी भी कार्यक्रम के क्रियान्वयन में अपनी सहभागिता निभाता है। साक्षर व्यक्ति में किसी भी कार्यक्रम के सकारात्मक व नकारात्मक पहलूओं के मूंल्याकन करने की क्षमता अधिक होती है। साक्षरता जनसंख्या की गुणात्मक विशेषता है जो किसी क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक यथार्थ व विश्वसनीय सूचक है।

साक्षरता दर को प्रभावित करने वाले कारको में आर्थिक विकास का स्तर नगरीकरण, जीवन स्तर, महिलाओं की सामाजिक स्थिति, विभिन्न शैक्षणिक सुविधाओं की उपलब्धता तथा सरकारी नीतियाँ प्रमुख है। श्रीमाधोपुर तहसील में साक्षरता का अध्ययन यदि कृषि कार्य के संदर्भ में करे तो कृषि विकास एवं आधुनिकरण प्रक्रिया हेतु किसान का साक्षर होना आवश्यक हैं। शिक्षित किसान कृषि उत्पादन की नई तकनीकियों को मशीनरी आदि के बारे में जानकारी विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त करके आसानी से अपने व्यवसाय में अपना लेता है तथा अशिक्षित किसान पुरानी कृषि पद्धति एवं रूढिवादी विचारों के आधार पर ही कृषि कार्य करता है। अशिक्षित किसान कृषि को देवी–देवताओं का दान या उपकार मानते है, जबकि शिक्षित किसान इन विचारों से दूर रहते हुए कृषि में नई तकनीकियों एवं औजारों का प्रयोग करता हुआ कृषि उत्पादन में वृद्धि करता है। शिक्षित किसान साख सुविधाओं कृषि विपणन आदि सुविधाओं का भी अधिकतम लाभ प्राप्त करने की दिशा में हमेशा तत्पर रहता हैं।

सारणी संख्या 5 : श्रीमाधोपुर तहसील साक्षरता– वर्ष 2001–2011

क्षेत्र	साक्षरता प्रतिशत में					
	वर्ष 2001			वर्ष 2011		
	पुरूष	स्त्री	कुल	पुरूष	स्त्री	कुल
ग्रामीण	83.55	54.91	69.42	85.39	55.98	71.01
शहरी	87.77	58.32	73.80	88.71	64.63	77.09
कुल	84.23	55.42	70.10	86.03	57.61	72.17

स्रोत : कार्यालय जिला सांख्यिकी अधिकारी, सीकर वर्ष 2001 व 2011

सारणी संख्या 6 : श्रीमाधोपुर तहसील साक्षरता– दशकीय अन्तर

क्षेत्र	साक्षरता प्रतिशत में 10 वर्षीय अन्तर		
	पुरूष	स्त्री	कुल
ग्रामीण	1.84	1.07	1.59
शहरी	0.94	6.31	3.29
कुल	1.8	2.19	2.07

स्रोत : कार्यालय जिला सांख्यिकी अधिकारी, सीकर वर्ष 2001 व 2011

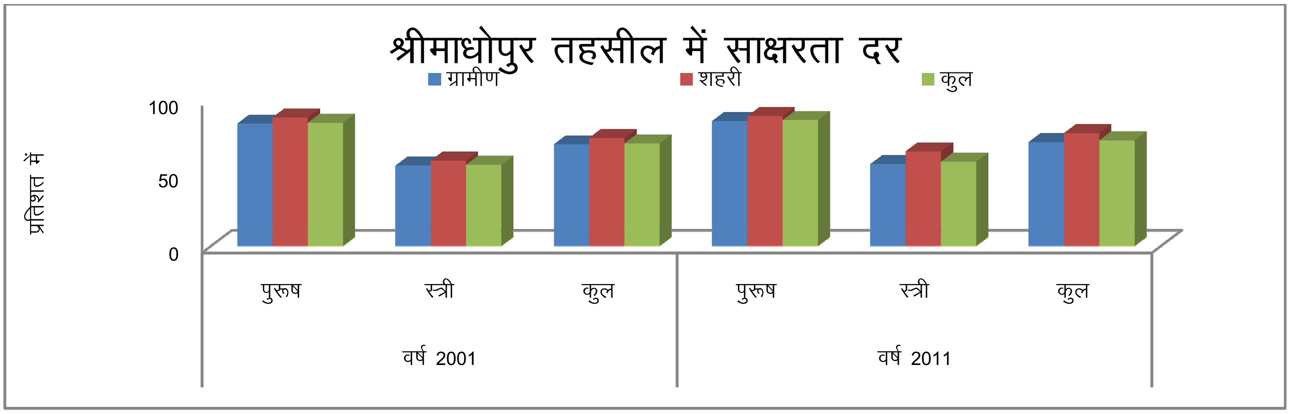

आरेख 7 : श्रीमाधोपुर तहसील में साक्षरता दर

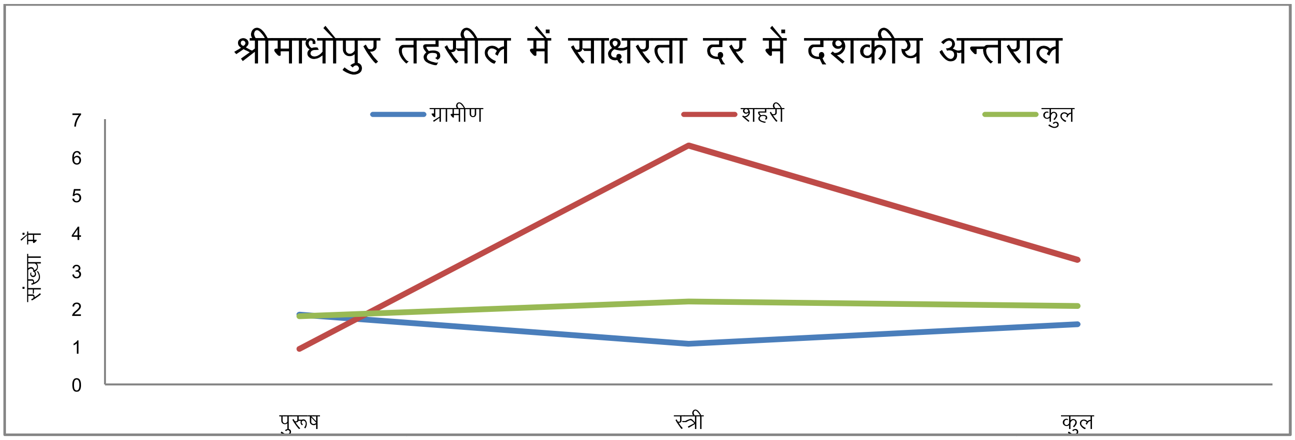

आरेख 8 : श्रीमाधोपुर तहसील में साक्षरता दर का 10 वर्षीय अन्तर

अध्ययन क्षेत्र श्रीमाधोपुर तहसील साक्षरता की दृष्टि से मध्यम स्थान रखता है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार साक्षरता मात्र 70.10 प्रतिशत थी। जिसमें ग्रामीण 69.42 प्रतिशत तथा शहरी 73.80 प्रतिशत थी। सन् 2011 में साक्षरता में काफी अधिक बढोत्तरी हुई। जिसका प्रतिशत 72.17 था, जिसमें से ग्रामीण 71.01 प्रतिशत तथा शहरी 77.09 प्रतिशत हो गई। इस दशक में ग्रामीण क्षेत्र में काफी अधिक साक्षरता की दर

बढ़ी। इसका मुख्य कारण क्षेत्र में स्कूलों का अधिक खुलना तथा लोगों में जागरूकता का होना है। ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरी क्षेत्र में साक्षरता का प्रतिशत अधिक है। इसका मुख्य कारण शहरों में सुविधा का अधिक होना है।

निष्कर्ष

मानव सभ्यता के विकास एवं उसमें आई जटिलताओं के साथ–साथ न तो जनसंख्या वितरण प्रारूप ही सरलता से मिलता है और न ही इसके वितरण का स्पष्टीकरण क्योंकि वर्तमान समय में जनसंख्या वितरण बहुत अधिक क्षेत्रीय विस्तार लिये हुये है और साथ ही राजनैतिक एवं प्रशासनिक ईकाईयाँ भी बढ गई है। अब जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का अध्ययन एक जटिल प्रक्रिया जरूर है, लेकिन जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं ने जनसंख्या वितरण एवं घनत्व का सफलतापूर्वक विश्लेषण किया है।

अध्ययन क्षेत्र में पुरूष साक्षरता की तुलना में महिला साक्षरता कम है इसका प्रमुख कारण स्त्रियों का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना है तथा इसके अलावा अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या का ज्यादा भाग ग्रामीण होने के कारण पुरूष व स्त्रियाँ कृषि कार्यो में लगे हुए हैं एवं बच्चों को भी शीघ्र ही खेती के काम मे लगा लिया जाता है। वर्तमान समय में क्षेत्र में आज भी बच्चो को स्कूल न भेजकर घरेलू व कृषि कार्यो में अधिकाधिक रूप से लगाया जाता है। साथ ही क्षेत्र में शैक्षिक सुविधाओं का भी अभाव है। परन्तु जिले में सरकार ने साक्षरता को बढाने हेतु शिक्षा कार्यक्रम, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं की स्थापना आदि के माध्यम से प्रयासरत है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में सरकार विशेष आर्थिक भार उठाकर शिक्षा के प्रसार का प्रयास कर रही है। जिससे अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा का स्तर बढ रहा है।

किसी क्षेत्र या देश का आर्थिक विकास जिस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों से प्रभावित होता है उससे कहीं अधिक योगदान क्षेत्र के आर्थिक विकास मे जनसंख्या का होता है प्राकृतिक संसाधन निष्क्रिय होते है लेकिन मानव ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है जनसंख्या, श्रम, पूर्ति, कार्य क्षमता, कार्यकुशलता, साक्षरता ,स्वास्थ्य आदि सभी तथ्य मानव शक्ति के रूप में प्रभाव दिखाते है।

वर्ष 2001 से 2011 की जनगणना तक के समय में अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या में सकारात्मक वृद्धि अंकित की गई है। लिंगानुपात विगत दशक में बढ़कर 936 स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरूष हो गई है। जनसंख्या घनत्व भी 423 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। आधारभूत सुविधाओं के उच्च विकास के कारण साक्षरता दर में परिवर्तन अध्ययन क्षेत्र में देखा गया है। विशेषकर महिलाओं की शिक्षा में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। वर्ष 2011 में श्रीमाधोपुर तहसील की सकल साक्षरता 72.17 प्रतिशत दर्ज की गई है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि के विकास से सिंचाई क्षेत्र में, उत्पादकता, रोजगार आदि में भी वृद्धि हुई है। यहां भूमि उपयोग परिवर्तन पर जनसंख्या का दबाव अधिक रहा है जिससे यहां आर्थिक सामाजिक विकास भी बढ रहा है और भूमि उपयोग को विभिन्न विधियों के साथ समायोजित किया जा रहा है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि क्षेत्र कृषि विकास व रोजगार सम्भावना के साथ–साथ मानव विकास सूचकांकों में वृद्धि होगी जिससे क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल होगा।

संदर्भ :–

1. नाथूरामका, लक्ष्मीनारायण (2013) :राजस्थान की अर्थव्यवस्था, सी. बी. एच. पब्लिकेशन, पृ. 50–51

2. डॉ. गुर्जर, रामकुमार (1992) : इन्दिरा गॉधी नहर क्षेत्र का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 102
3. डॉ. गुर्जर, रामकुमार (1992) : इन्दिरा गॉधी नहर क्षेत्र का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 103
4. डॉ. भल्ला, आर. एल. (2011) : राजस्थान का भुगोल, कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, पृ. 263
5. डॉ. गुर्जर, रामकुमार (1992) : इन्दिरा गॉधी नहर क्षेत्र का भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ. 104
6. जिला सांख्यिकीय रूप रेखा, सीकर, 1991, 2011
7. जिला जनगणना प्रतिवेदन, सीकर, 2001 एवं 2011